नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

महामना और अटल जी को कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल की काव्यांजलि

वर्धा, 25 दिसंबर 2019 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी दोनों राजनेता हिंदी के अप्रतिम हिमायती थे। प्रो. शुक्ल मालवीय जी और वाजपेयी जी की जयंती पर विश्वविद्यालय की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा आयोजित समारोह में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। उन्होंने कहा कि मालवीय जी ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी में उच्च शिक्षण आरंभ कराया तो

वहीं अटल जी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को स्थापित किया। इन दोनों हिंदी हिमायती महान विभूतियों को अपना प्रेरणा स्रोत मानते हुए हिंदी विश्वविद्यालय हिंदी सेवा में निरंतर अग्रेसर है। प्रो. शुक्ल ने कहा कि मालवीय जी और अटल जी दोनों राजनेता के साथ ही कवि भी थे। मालवीय जी काशी विश्व हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए चंदा हासिल करने के लिए संस्कृत में कविताएं सुनाया करते थे। उन्होंने एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना की जहाँ युवा शक्ति धर्म, जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर माँ भारती की चिंता करती थी। मालवीय जी के कुलपति काल में जगजीवनराम जब विद्यार्थी थे और रुईयां छात्रावास में रहते थे तब पिछड़ी जाति के बर्तन धोने वाले ने निचली जाति के आधार पर जगजीवनराम का बर्तन साफ करने से मना कर दिया था। उस घटना के विरोध में छात्रावास में रह रहे सभी जाति के विद्यार्थियों ने भी अपना बर्तन उन

कर्मचारियों से धोने से मना कर दिया। यह मालवीय जी का प्रभाव था कि उनके सान्निध्य में शिक्षा हासिल करने वाली युवा शक्ति जाति से ऊपर उठकर संकीर्णता के प्रतिरोध के उठ खड़ी होती थी। कुलपति शुक्ल ने कहा कि पूना पैक्ट के सूत्रधार मालवीय जी ही थे। बाबासाहब भीमराम अंबेडकर ने केवल मालवीय जी पर ही भरोसा जताया था। उस भरोसे के बाद मालवीय जी का भी रूपांतरण हुआ और उन्होंने प्रयाग के संगम में आकर अपनी संस्था ब्राह्मण महासभा का विसर्जन कर दिया। प्रो. शुक्ल ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ऐसे सर्वमान्य राष्ट्रनेता थे जिनका भाषण सुनने के लिए लोग सिनेमा का टिकट फाड़ देते थे। अटल जी के प्रशंसक विरोधी दलों के नेता भी थे। अटल जी ने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित किया। संसद में भी उन्होंने हिंदी में अपनी वाग्मिता से सबको प्रभावित किया। कार्यक्रम की शुरुआत ईसा मसीह, मदन मोहन मालवीय और अटल बिहारी वाजपेयी के चित्रों पर माल्यार्पण के साथ हुई। उसके बाद मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपाशंकर चौबे ने विषय प्रवर्तन किया। तदुपरांत श्रीबड़ाबाजार कुमार सभा

पुस्तकालय कोलकाता में हुए अटल बिहारी वाजपेयी के एकल काव्यपाठ की वीडियो प्रस्तुति की गयी। कुलपति प्रो. शुक्ल ने मालवीय जी और अटल जी को अपनी काव्यांजलि अर्पित की। वैदिक ज्ञान परंपरा के आचार्य और दर्शनशास्त्री के रूप में पूरे देश में प्रतिष्ठित प्रो. शुक्ल ने सार्वजनिक मंच से पहली बार अपनी कविताओं का पाठ किया। अन्धेरा नहीं जीतता है शीर्षक उनकी कविता की ये पंक्तियां बहुत सराही गयीं : जो यह कहता है हर युद्ध तो अधेंरा ही जीतता है, वो आदमी केवल अपनी अकर्मण्यता पर चीखता है। प्रो. शुक्ल ने अपनी एक अन्य कविता में कहा : आओ हम फिर एक नया इतिहास बनाते है, अपनी माटी के खातिर नये इन्द्र को आजमाते हैं। तथागत को नमन है शीर्षक कविता में प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा : चरण जिसके चक्रवर्ती से प्रवर्तित चरैवेति चरैवेति ही गान जिसका। कलिकलुष आतप्त मन पर बह रही करूण कृपा ही ध्यान जिसका।। तृष्णा तृषा से विपथ मन को मूल्य से पूर्ण करना अभियान जिसका। प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल की धुआं केवल धुआं कविता सबसे ज्यादा सराही गयी जिसकी पंक्तियां थीं : पर्वत पर आग लगी । घाटी में शोर हुआ। धुंआ

धुंआ धुंआ। जन जन त्रस्त हुआ। राजा को सन्देश गया। धुंआ धुंआ । चर्चा हुई धुंआ और धुंआ।दावानल नहीं बडवानल नहीं। आंधी भी नही तूँफा भी नहीं । बस धुंआ केवल धुंआ। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋषभ मिश्र ने

किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. के. के. सिंह ने प्रस्तुत किया। समारोह में प्रतिकुलपति द्वय डॉ. चंद्रकांत रागीट, प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल समेत भारी संख्या में शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे।